कोयम्बत्तूर का तापमान | अधिकतम 30.00°c | न्यूनतम 22.00°c

सूर्यास्त आज शाम 06:01 बजे
सूर्योदय कल सुबह 06:12 बजे

प्रेरणा ◆ कोयम्बत्तूर के एम. योगनाथन रोजाना लगाते हैं पौधे

कंडक्टर के सिर पर हरियाली का ताज !

संदीप त्रिपाठी @ कोयम्बत्तूर पत्रिका

patrika.com

यदि रास्ते पर कहीं पेड़ गिरे नजर आते हैं तो उनको भी दर्द होता है और वे उनके इलाज में जुट जाते हैं। उनका कहना है कि इनमें भी जान है। इन्हें भी एक समान फलने व फूलने का अवसर मिलना चाहिए। ऐसे में इन पर अत्याचार क्यों किया जाए। पेड़ों की कटाई करने वाले लोगों से भी वे हमेशा लोहा लेने को तैयार मिलते हैं। किसी पेड़ की कटाई की जानकारी मिलते ही उसकी रक्षा के लिए निकल पड़ते हैं। सुबह की सैर के साथ ही वृक्षारोपण अभियान भी शुरू हो जाता है। बात हो रही है कोयम्बत्तूर निवासी व इको वारियर के नाम से प्रसिद्ध एम.योगनाथन की। उनको ट्री मैन के नाम से भी जाना जाता है। सामान्य परिवार में जन्मे योगनाथन तमिलनाडु राज्य परिवहन निगम में बतौर बस कंडक्टर नौकरी करते हैं।

प्रमुख पुरस्कार

1) इको वारियर
2) टिम्बरलैण्ड पुरस्कार
3) रीयल हीरो अवार्ड

दोपहर से उनकी ड्यूटी शुरू होती है। इससे पहले वे विभिन्न स्कूल या कॉलेजों से मिले आमंत्रण के अनुसार वृक्षारोपण के लिए निकल पड़ते हैं। दोपहर से लेकर रात तक गांधीपुरम से मुरुदमलै तक बस में कंडक्टरी करने वाले योगनाथन में उनके द्वारा रोपित किए गए पौधे ही उनमें ऊर्जा का नया संचार करते हैं।

कोयम्बत्तूर के सिद्धापुर में एक किराए के मकान में रहने वाले योगनाथन को बचपन से ही पेड़ों से लगाव रहा है। नीलगिरि के कोटागिरि से उन्होंने अकेले ही वृक्षारोपण अभियान शुरू किया था और आज भी वे अकेले ही निकल पड़ते हैं वृक्षारोपण के लिए। इसके लिए उन्होंने बकायदा दो नर्सरियों के साथ करार भी कर रखा है। यहां उनके लिए पेड़ तैयार होते हैं। अपनी कमाई का 40 फीसदी हिस्सा वे वृक्षारोपण पर ही खर्च कर देते हैं। 25 साल से अधिक समय में वे तमिलनाडु के विभिन्न हिस्सों में एक लाख से अधिक पेड़ लगा चुके हैं।

शहर के सिद्धापुर स्थित अपने घर में पुरस्कारों के साथ एम.योगनादन।

पढ़ा रहे जागरूकता का पाठ

योगनाथन 12वीं कक्षा तक पढ़े हैं। हालांकि वे आज विभिन्न स्कूल [illegible] व कॉलेजों में छात्र-छात्राओं को [illegible] वृक्षों का पर्यावरण में योगदान का पाठ पढ़ाते हैं। प्रोजेक्टर के माध्यम से वे लोगों को जागरूक करते हैं। [illegible] चला चुके हैं। इस कार्य में उनकी पत्नी बलरमती, पुत्री मोनिशा व सत्यप्रिया भी बखूबी साथ देती हैं।

हर जिले में 100 एकड़ पर पौधारोपण का लक्ष्य

योगनाथन का लक्ष्य अब तमिलनाडु के हर जिले में 100 एकड़ जमीन पर वृक्षारोपण करने का है। इसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री के पास पत्र भी लिखकर जमीन उपलब्ध करवाने की अपील की है। यहां वे बारिश वन्यीकरण (रेन फोरेस्टेशन) का काम करेंगे।

हर पेड़ का नामकरण बच्चे के नाम से

योगनाथन जिस स्कूल में भी जाते हैं वहां वृक्षारोपण के बाद वे स्कूल के बच्चों के नाम पर ही पेड़ का नामकरण कर देते हैं। साथ ही बच्चों से उसकी देखरेख करने की बात भी कहते हैं। यही नहीं अपने घर आने वालों को वे कुम्हड़ा, करेला, लौकी, टमाटर सहित विभिन्न सब्जियों के बीज भी दे देते हैं। हालांकि अन्य जगहों पर वे नीम, आम सहित अन्य पेड़ों का वृक्षारोपण करते हैं। बच्चों को वे अपने हर जन्मदिन पर एक पेड़ लगाने का भी संकल्प दिलवाते हैं। योगनाथन कहते हैं कि आज पानी, जमीन, वायु प्रदूषित हो रहे हैं। इससे बचाव का एक ही विकल्प है कि हम वृक्षारोपण को बढ़ावा दें।